2 मार्च, 2022 को चेन्नई में 24वें भगवान महावीर फाउंडेशन पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में माननीय अध्यक्ष, लोक सभा का भाषण

भगवान महावीर फाउंडेशन के न्यासी, श्री प्रवीन बी. छेदा जी; भारत के भूतपूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त एवं निर्णायक मंडल के सदस्य, श्री टी.एस. कृष्णमूर्ति जी; भगवान महावीर फाउंडेशन के प्रबंध न्यासी, तिरू प्रसन्नचंद जैन जी; देवियो और सज्जनो :

वणक्कम (नमस्ते),

आप सभी को महाशिवरात्रि महापर्व पर शुभकामनाएँ देता हूँ, बधाई देता हूँ।

आज यहां ऐतिहासिक चेन्नई नगर में भगवान महावीर फाउंडेशन द्वारा आयोजित 24वें महावीर पुरस्कार वितरण समारोह में आपके बीच आकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। महावीर फ़ाउंडेशन को हार्दिक बधाई और साधुवाद कि आपने मानवता की सेवा में गौरवशाली योगदान देने वाले व्यक्तियों को सम्मानित करने के लिए इस कार्यक्रम को आयोजित किया है।

साथियो, मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि महावीर फ़ाउंडेशन ने अपनी स्थापना के 28 वर्षों में मानव सेवा के कार्य के साथ इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले समाज सेवकों को सम्मानित करने का भी कार्य किया है।

अपनी स्थापना के समय से ही महावीर फ़ाउंडेशन ज़रूरतमंदों की सेवा करने और सामुदायिक सेवा में योगदान देने के लिए लोगों को प्रेरित करता रहा है। विगत वर्षों के दौरान, यह संस्था ऐसे व्यक्तियों और संस्थाओं की पहचान करके उन्हें प्रोत्साहन और सम्मान प्रदान करने का उल्लेखनीय कार्य करती रही है जो हमारे समाज में वंचितों और कमजोर लोगों के कल्याण और विकास हेतु निः स्वार्थ सेवा दे रहे हैं।

यह और भी प्रसन्नता का विषय है कि पहले जहां सामुदायिक और समाज सेवा श्रेणी में ही पुरस्कार दिए जाते थे, वहीं अब इसका दायरा बढ़ाते हुए अहिंसा और शाकाहार, शिक्षा, औषधि और सामुदायिक और समाज सेवा के क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य हेतु भी पुरस्कार दिया जा रहा है।

आज के परिप्रेक्ष्य में उत्तम स्वास्थ्य के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन तथा ग्लोबल वॉर्मिंग जैसी वैश्विक समस्याओं के नियंत्रण के लिए भी शाकाहार को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इससे इन मुद्दों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने की आप की प्रतिबद्धता भी ज़ाहिर होती है।

मित्रों, हमारे देश की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता का मूल आधार सभी प्राणियों के प्रति करुणा और प्रकृति के अनुकूल जीवन शैली बनाए रखना है। इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि जब भी समाज में कुरीतियाँ आयी हैं, जब भी समाज में अज्ञानता और अंधविश्वास का विस्तार हुआ है, हमारे ऋषियों मुनियों ने मानवता को नयी राह दिखायी है।

भगवान राम, भगवान महावीर तथा भगवान बुद्ध इसी भारतीय चेतना एवं विवेक के प्रतीक पुरुष कहलाते हैं। इन सबने समाज में उपस्थित बुराइयों को समाप्त करने के लिए हमें प्रेरित किया, सत्य की राह दिखायी तथा लोक कल्याण के लिए वे सदैव समर्पित रहे।

अहिंसा और सदाचार की सीख देने वाले जैन धर्म ने दुनियाभर को जीवमात्र के लिए दया का संदेश दिया है। करुणा, प्रेम, त्याग, तप और मनुष्यता जैन धर्म की अनमोल शिक्षाएं हैं।

भगवान आदिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर जैसे अनेक मनीषियों के सिद्धांतों से समृद्ध, महान जैन संप्रदाय का मानना है कि हमारी प्रकृति में सभी जीवों का समान महत्त्व है। हर एक वस्तु में, चाहे वह सूक्ष्म से सूक्ष्म कण ही क्यों न हो, उसमें भी जीवन है। इसलिए प्राणिमात्र के लिए दयाभाव रखना चाहिए। मनसा, वाचा, कर्मणा अहिंसा का पालन करना चाहिए।

पैरों के नीचे कोई चींटी भी न आ जाए, जाने अनजाने में भी किसी प्राणी जीवन को हानि न पहुँचे, किसी का नुकसान न हो; इसके लिए जैन साधक बड़ी ही सावधानी रखते हैं।

मैं समझता हूँ कि अहिंसा का इससे बड़ा अनुप्रयोग, इससे बड़ी अवधारणा दुनिया में शायद ही दूसरी कहीं देखने को मिलती हो।

आज हम जहाँ मानव जीवन को ही सबकुछ मान बैठे हैं, वहीं जैन शिक्षाएं न सिर्फ़ मनुष्य बल्कि हर एक प्राणी, हर एक जीव के सह अस्तित्व की बात करती है।

साथियों, पूरे विश्व के लिए वर्तमान समय एक चुनौतियों से भरा समय है। वैश्विक महामारी के साथ साथ प्राकृतिक आपदाएँ, जलवायु परिवर्तन, युद्ध तथा अशांति जैसी कई चुनौतियाँ हैं, जिनका समाधान हमारे साझे भविष्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इस परिप्रेक्ष्य में आज आवश्यक है कि हम अपने महापुरुषों की शिक्षाओं, उनके उपदेशों से प्रेरणा लें और संपूर्ण विश्व एवं पृथ्वी के स्वर्णिम भविष्य के लिए कार्य करें। आप सभी पुरस्कार विजेताओं और समाज कल्याण के क्षेत्र में कार्य कर रहे सभी लोग सराहना के पात्र हैं और आपके जीवन और कार्य सभी को इस क्षेत्र में और अच्छा कार्य करने के लिए प्रेरित करेंगे, ऐसी मेरी आशा है। आपके कार्यों ने मानवता के बेहतर भविष्य की आशा जगायी है।

मित्रो, भारत 135 करोड़ की आबादी वाला एक ऐसा देश है जहां विभिन्न भाषाओं, भौगोलिक क्षेत्रों, धार्मिक परंपराओं तथा सामाजिक तथा सांस्कृतिक विविधतायें मौजूद हैं। हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी के ऐसे युग में रह रहे हैं जिसने मानव जाति के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वैज्ञानिक जानकारी में वृद्धि और व्यापक दृष्टिकोण ने हमारे समाज के पारंपरिक मूल्यों और धारणाओं को भी प्रभावित किया है। ऐसे में आज हमारे लिए आवश्यक है कि हम आधुनिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करते हुए अपनी परंपराओं और मूल्यों की भी रक्षा करें। हम अपनी संस्कृति के मूल भाव जैसे

परोपकार, अहिंसा, शांति और सौहार्दपूर्ण सह-अस्तित्व एवं जरूरतमंदों की सेवा के महत्व को समझें। ये वैसे आदर्श हैं, वैसे मूल्य हैं जो समय के साथ नहीं बदलते। ये आज भी उतने ही ज़रूरी हैं, उतने ही प्रासंगिक हैं जितने वे आज से हज़ारों वर्ष पूर्व थे। इस तथ्य को आज की पीढ़ी के समक्ष रखना अत्यंत आवश्यक है।

हमारे देश में परोपकार को सबसे बड़ा सद्गुण माना गया है। हमने हमेशा स्वयं को सीमित नहीं किया है, बल्कि हमारी विचारधारा में पूरी मानवजाति को एक परिवार माना गया है। *वसुधैव कुटुम्बकम* की अवधारणा हमारे सांस्कृतिक मूल्यों और आध्यात्मिकता का प्रेरणास्रोत रही है। "*सभी से प्रेम और सभी की सेवा*" के मूल सिद्धांत पर आधारित जैन धर्म भी हमारी इसी समृद्ध विरासत का एक महत्वपूर्ण भाग है।

साथियो, भगवान महावीर का एक व्यापक वैश्विक दृष्टिकोण था। वे इस पृथ्वी के प्रत्येक जीव की सहायता करना और उनके सभी प्रकार के दुखों को दूर करना चाहते थे। उन्होने ऐसे विश्व की कल्पना की थी जहां हर जीव शांति से रह सके।

आज हमारे समाज के समक्ष जितनी भी मानव निर्मित समस्याएँ हैं, उनका समाधान जीवन के प्रति इसी दृष्टिकोण में है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी भगवान महावीर द्वारा दिखाए गए अहिंसा के मार्ग का अनुसरण किया। वस्तुतः अहिंसा ही सामाजिक शांति और सौहार्द का मार्ग है, धर्म का मार्ग है।

आज मानव जाति के समग्र कल्याण के लिए आवश्यक है कि हम सभी भगवान महावीर की शिक्षाओं के अनुसार चलने का संकल्प लें और अपने जीवन में अहिंसा, इच्छाओं पर संयम और समानता जैसे मूल्यों को अपनाएँ। भगवान महावीर की इन शिक्षाओं को यदि सही ढंग से समझकर जीवन में उतारा जाए तो जीवन और समाज में संतोष, आत्मिक सुख और आनंद का स्थान होगा।

मैं इस संस्था के संस्थापक श्री एन. सुगलचंद जैन जी और महावीर फ़ाउंडेशन के ट्रस्टीज़ को समाज सेवा को प्रोत्साहित करने के लिए उनके द्वारा किए जा रहे अथक प्रयासों के लिए बधाई देता हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि उनके ये प्रयास अन्य लोगों को भी निःस्वार्थ भाव से सेवा करने के लिए प्रेरित करेंगे।

मुझे जानकारी मिली है कि इस संस्था से जुड़े व्यक्तियों ने जरूरतमंदों और समाज के वंचित वर्गों की सहायता करने का काम भगवान महावीर फाउंडेशन तथा ऐसी ही अन्य संस्थाओं के माध्यम से किया है। आप सब जो मानव सेवा का कार्य कर रहे हैं, उसके लिए आपको साधुवाद।

मित्रों, आज के कार्यक्रम में जो पुरस्कार दिए गए हैं, वह बलिदान और निःस्वार्थ सेवा के उसी भाव को दर्शाते हैं, जो हमारे भारतीय समाज में रचे-बसे हैं और सदियों से हमारी पहचान है। अहिंसा एवं शाकाहार के साथ साथ शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, चिकित्सा तथा सामुदायिक सेवा जैसे समसामयिक महत्व के क्षेत्रों में भी पुरस्कार दिए गए हैं। यह अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है।

देवियो और सज्जनो, ऐसे अनेक लोग और संस्थाएं हैं, जो निःस्वार्थ भाव से समाज के कमजोर और वंचित वर्गों की सेवा करने के लिए सदैव तैयार रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों और संस्थाओं की पहचान करके उन्हें

सम्मानित करना समाज में एक सकारात्मक संदेश देने के लिए अत्यंत आवश्यक है। मुझे आशा है कि वे इस दिशा में अपना कार्य जारी रखेंगे और हमें प्रेरित करते रहेंगे।

मैं भगवान महावीर फाउंडेशन को एवं सभी पुरस्कार विजेताओं को एक बार फिर से बधाई देता हूँ और आप सभी को अपनी शुभकामनायें देता हूँ।

नान्द्री (धन्यवाद)।